अथ श्रीवृत्तिप्रभाकरविषयानुक्रमणिका ।

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
	अथ प्रत्यक्षप्रमाणनिरूपणं नाम प्रथमः प्रकाशः १.	
१	वृत्तिके सामान्यलक्षण और भेद	१
२	प्रमाणके भेदका कथन	४
३	करणका लक्षण	४
४	प्रत्यक्षप्रमाके भेदका कथन	९
५	प्रत्यक्षप्रमाके श्रोत्रजप्रमाका निरूपण.	६
६	प्रत्यक्षप्रमाके भेद त्वाचप्रमाका निरूपण.	१०
८	प्रत्यक्षप्रमाके भेद रासनप्रमाका निरूपण.	१६
९	प्रत्यक्षप्रमाके भेद घ्राणजप्रमाका निरूपण.	१७
१०	मानसप्रत्यक्षप्रमाका निरूपण	१८
११	प्रत्यक्षप्रमाके करणका विचार	२१
१२	ज्ञानके आश्रयका कथन.	२२
१३	न्यायमतके अनुसार भ्रमकी रीति.	२२
१४	वस्तुके ज्ञानमें विशेषणके ज्ञानकूं हेतुता.	२२
१५	विशेषण और विशेष्यका स्वरूप	२५
१६	विशेषण और विशेष्यके ज्ञानके भेदपूर्वक न्यायमतके भ्रमज्ञानकी समाप्ति.	२६
१७	वेदांतसिद्धांतके अनुसार इंद्रिय अजन्यभ्रमज्ञानकी रीति.	२८
१८	न्याय और वेदान्तकी अन्य-विलक्षणता.	२९
१९	वाचस्पतिके मतका (मनकी इंद्रियताकी) सारग्राही दृष्टिसैं अंगीकार	३०
२०	न्याय और वेदान्तका प्रत्यक्ष विचारमें भेद.	३३
२१	प्रत्यक्षप्रमाका उपसंहार.	३४
	अथानुमानप्रमाणनिरूपणं नाम द्वितीयः प्रकाशः २.	
१	अनुमितिकी सामग्रीका लक्षण और स्वरूप.	३६
२	अनुमिति ज्ञानमैं व्याप्तिके ज्ञानकी अपेक्षाप्रकार.	३७
३	सकलनैयायिकमतमें अनुमितिका क्रम.	३८
४	अनुमितिविषै मीमांसाका मत	३९
५	अद्वैतमतानुसार अनुमितिकी रीति	४०
६	व्याप्तिकी स्मृतिकी व्यापारता और संस्कारकी अव्यापारता	,,
७	स्वार्थानुमिति और अनुमानका स्वरूप.	४१

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
८	परार्थानुमान अनुमिति और तर्कका स्वरूप	४२
९	वेदान्तमतमैं तर्कसहित परार्थानुमानका स्वरूप.	४४
१०	वेदांतमैं अनुमानका प्रयोजन ...	,,

अथ शब्दप्रमाणनिरूपणं नाम तृतीयः प्रकाशः ३.

१	शाब्दीप्रमाका भेद.	४५
२	शाब्दीप्रमाका प्रकार	,,
३	शब्दकी शक्तिवृत्तिका कथन	४६
४	शाब्दीप्रमाकी रीतिपूर्वक शक्तिविषै विवाद.	४८
५	वाक्यनका भेद	५१
६	शब्दकी शक्तिलक्षणावृत्तिका संक्षेपतैं कथन.	५२
७	वाक्यार्थज्ञानका क्रम.	५३
८	लक्षणका प्रकार.	५४
९	शब्दकी तृतीयगौणवृत्तिका कथन.	६१
१०	चतुर्थीव्यंजनावृत्तिका कथन	,,
११	लक्षणाके भेदका कथन.	६२
१२	शाब्दबोधकी हेतुताका विचार.	६६
१३	महावाक्यमें लक्षणाका उपयोग और तामैं शंकासमाधान.	६८
१४	लक्षणाविना शक्तिवृत्तिसैं महावाक्यकूं अद्वैत ब्रह्मकी बोधकता.	७०
१५	मीमांसाका मत.	७६
१६	प्राचीनवृत्तिकारका मत.	७७
१७	षट्वैदिक वाक्यके तात्पर्यके लिंग.	७९
१८	आकांक्षा आदिक च्यारि शाब्दबोधके सहकारी.	८०
१९	उत्कटजिज्ञासाकूं बोधकी हेतुता	८६
२०	वेदांतके तात्पर्य और वेद अरु शब्द विषै विचार	८८

अथोपमाननिरूपणं नाम चतुर्थः प्रकाशः ४.

१	क्रमभंगके अभिप्रायपूर्वक दो न्याय रीतिसैं उपमान औ उपमितिका द्विधा स्वरूप.	९२
२	वेदांतरीतिसैं उपमान औ उपमिका स्वरूप.	९४
३	विचारसागरमैं न्यायरीतिसैं उपमितिके कथनका अभिप्राय.	९५
४	पूर्वउक्तवेदांतरीति औ न्यायरीतितैं विलक्षण उपमिति औ उपमानका लक्षण.	९५
५	वेदांतपरिभाषा औ ताकी टीकाकी उक्तिका खंडन.	,,
६	करणके लक्षणका निर्णय.	९८

अथ अर्थापत्तिप्रमाणनिरूपणं नाम पंचमः प्रकाशः ५.

१	न्यायमतमैं अर्थापत्तिका अनंगीकार त्रिधा अनुमानका वर्णन.	१०२

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
२	वेदांतरीतिसैं एक अन्वयि (अन्वय-व्यतिरेकि) अनुमान और अर्थापत्तिका स्वीकार.	१०४
३	अर्थापत्तिप्रमाण और प्रमाका स्वरूप भेद अरु उदाहरण	१०५
४	अर्थापत्तिका जिज्ञासुके अनुकूल उदाहरण	१०८

अथानुपलब्धिप्रमाणनिरूपणं नाम षष्ठः प्रकाशः ६.

१	अभावका सामान्यलक्षण और भेद.....	१०९
२	प्राचीन न्यायमतमैं अभावके परस्पर विलक्षणताकी साधक प्रतीति	१११
३	नवीनन्यायमतमैं अभावके परस्पर विलक्षणताकी साधक प्रतीति	११२
४	अभावका द्वितीयलक्षण और विलक्षण प्रतीति	११३
५	अनोन्याभावलक्षण और तामैं शंकासमाधान.	”
६	नवीनरीतिसैं संसर्गाभावके च्यारि भेद और तिनके लक्षण और परीक्षा	११६
७	च्यारीसंसर्गाभावका प्रतियोगीसैं विरोध और अन्योन्याभावका अविरोध	१२१
८	चतुर्विधसंसर्गाभावका परस्पर विरोध और अन्योन्याभावका तिनसैं अविरोध	१२३
९	प्राचीनमतमैं अभावनके परस्पर और प्रतियोगीसैं विरोधाविरोधका विस्तारसैं प्रतिपादन	१२४
१०	नवीनतार्किककरि सामयिकाभावके स्थानमैं अनित्य अत्यंताभावका अंगीकार और तामैं शंकासमाधान	१३६
११	नवीन तार्किकके उक्तमतका खंडन	१३८
१२	न्यायसंप्रदायमैं घटके प्रध्वंसके प्रागभावकी घट और घटप्रागभावरूपता.	१४०
१३	उक्तमतका खंडन और घटप्रध्वंसके अभावप्रतियोगिक प्रागभावकी सिद्धि.	१४५
१४	सामयिकाभावके प्रागभावकी अभाव प्रतियोगिता.	१४२
१५	प्राचीनप्रागभावके प्रध्वंसकी प्रतियोगिप्रतियोगि और प्रतियोगिप्रतियोगीके ध्वंसमैं अंतर्भावका नवीनकरि खंडन और ताकी अभावप्रतियोगिता	१४१
१६	घटान्योन्याभावके अत्यंताभावकी घटस्वरूपता और तामैं दोष.	१४४
१७	अत्यंताभावके अत्यंताभावकी प्रथमात्यंताभावकी प्रतियोगीरूपताका प्रतिपादन और खंडन.	१४५
१८	अभावप्रतियोगिक अन्योन्याभावके उदाहरण और उक्तार्थका अनुवाद	१४७

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
१९	उक्तन्यायमतमैं वेदांतसैं विरूद्ध आशंकाप्रदर्शन और अनादि प्रागभावका खंडन, ...	१४८
२०	अनंतप्रध्वंसाभावका खंडन.	१५२
२१	अन्योन्याभावकी सादिसांतता और अनादिताका अंगीकार ...	१५३
२२	अभावकी प्रमाके हेतुप्रमाणका निरूपण और अभावज्ञानके भेदपूर्वक न्यायमतमैं भ्रमपक्षमैं विषयानपेक्षा	१५५
२३	सिद्धांतमैं परोक्षभ्रममैं विषयकी अनपेक्षा और अपरोक्षभ्रममैं अपेक्षा	१५६
२४	सिद्धांतमैं अभावभ्रम अनादिस्थानमैं अन्यथाख्यातिका अंगीकार.	,,
२५	प्रत्यक्षपरोक्षयथार्थभ्रमरूप अभाव प्रमाकी इंद्रिय और अनुपलंभादि सामग्रीका कथन.	१५८
२६	स्तंभमैं पिशाचके दृष्टांतसैं शंकासमाधानपूर्वक अनुपलंभका निर्णय.	१६१
२७	उपलंभके आरोप और अनारोपकरिकै अभावकी प्रत्यक्षता और अप्रत्यक्षतामैं उदाहरण.....	१६९
२८	जिसइंद्रियतैं उपलंभका आरोप तिसइंद्रियतैं उपलंभके आरोपतैं अभावका प्रत्यक्ष.	१७२
२९	न्यायमतमैं सामग्रीसहित अभावप्रमाका कथन.	१७५
३०	भट्ट और वेदांत मतमैं न्यायमततैं प्रमाकी सामग्रीविषै विलक्षणता.	१७६
३१	वेदांतरीतिसैं इंद्रियअजन्य प्रत्यक्षके लक्षणका निर्णय.	१७८
३२	प्रत्यभिज्ञा और अभिज्ञाप्रत्यक्षज्ञान और स्मृति आदि परोक्ष ज्ञानोंका सामग्रीसहित निर्णय.	१७९
३३	इंद्रियजन्यताके नियमसैं रहित प्रत्यक्षज्ञानका अनुसंधान.	१८३
३९	अभावके ज्ञानकी सर्वत्रपरोक्षताका निर्णय.	१८४
३५	अनुपलब्धिप्रमाणके अंगीकारमैं नैयायिककी शंका और सिद्धांतीका समाधान.	१८८
३६	अनुपलब्धिप्रमाणके निरूपणका जिज्ञासूकूं उपयोग.	१९५

वृत्तिभेद अनिर्वचनीयख्याति मंडनख्यातिखंडन औ स्वतः प्रमात्वप्रमाणनिरूपणं नाम सप्तमः प्रकाशः७.

१	उपादान (समवायि) असमवायि निमित्तकारण अरु संयोगका लक्षण	१९६
२	उभयकारणके अंगीकारपूर्वक तीसरे असमवायिकारणका खंडन.	२०१
३	वृत्तिज्ञानका उपादाननिमित्तकारण औ सामान्यलक्षण.	२०६
४	प्रत्यक्षके लक्षणसहित प्रमा अप्रमारूप वृत्तिज्ञानका भेद.	२०७

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
५	संशयरूप भ्रमका लक्षण और भेद.	२२७
६	निश्चयरूप भ्रमज्ञानका लक्षण.....	२२०
७	अध्यासकालक्षण और भेद.	२२१
८	अन्योन्याध्यासमैं शंकासमाधान.	२२३
९	अनात्मामैं अध्यस्त आत्माकी परमार्थसत्ताविषै तात्पर्य.	२२५
१०	अध्यासका अन्यलक्षण.	२२६
११	एक अधिकरणमैं भावाभावके विरोधकी शंका और समाधान.	,,
१२	अध्यासके प्रसंगमैं चारी शंका.	२२७
१३	उक्त च्यारी शंकाके समाधान.	२२९
१४	पूर्वोक्त अध्यासके भेदका अनुवाद और तामैं उदाहरण.	२३१
१५	सिद्धांतसंमत अनिर्वचनीय ख्यातिकी रीति सांप्रदायिक मत.	२३४
१६	उक्त अनिर्वचनीय ख्यातिरूप अर्थमें शंका और संक्षेपशारीरकका समाधान.	२३५
१७	कवि तार्किक चक्रवर्ति नृसिंहभट्टोपाध्यायके मतका अनुवाद और अनादर.	२३७
१८	अध्यासकी कारणतामैं पंचपादिका और विवरणका मत. ...	२३८
१९	पंचपादिका और संक्षेपशारीरकके मनकी विलक्षणता और तामें रहस्य.	२३९
२०	विषयोपहित और वृत्त्युपाहितचेतनके अभेदमैं शंकासमाधान.	२५०
२१	रज्जु आदिकनकी इदमाकार प्रमातैं सर्पादिकनका भ्रमज्ञान होवै तामैं दो पक्ष.	२४२
२२	कवितार्किकचक्रवर्ति नृसिंहभट्टोपाध्यायका मत	२४५
२३	उपाध्यायके मतमैं सामान्य ज्ञान (धर्मिज्ञान) वादीकी शंका औ समाधान	२४६
२४	प्राचीन आचार्य धर्मिज्ञानवादीका मत	२४९
२५	धर्मिज्ञानवादीके मतमैं उपाध्यायका शंका समाधान	२५१
२६	उपाध्यायकरि सादृश्यज्ञानकूं अध्यासकी कारणताका खंडन ...	२५३
२७	धर्मिज्ञानवादीकरि उपाध्यायके मतमें दोष और ताका परिहार	२५४
२८	उपाध्यायके मतमैं धर्मिज्ञानवादीकी शंका और समाधान	२५६
२९	उपाध्यायके मतमैं शंका और समाधान	२५९
३०	धर्मिज्ञानवादीकरि अध्यासमैं परंपरासैं नेत्रका उपयोग और उपाध्यायकरि शंखपीतताध्यासमैं साक्षात् उपयोग.	२६०
३१	धर्मिज्ञानवादीकरि शंखपीतताका अनध्यास औ उपाध्यायकरि ताका अनुवाद अरु दोष.	२६१
३२	धर्मिज्ञानवादीकरि उक्त दोषका (दोबार) समाधान औ उपाध्यायकरि (दोबार) दोष	२६३

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
३३	मधुर दुग्धमें तिक्त रसाध्यासकी रसनागोचरतापूर्वक उपाध्यायके मतका निष्कर्ष	२६५
३४	आचार्योक्ति औ युक्तिसें उपाध्याय मतकी विरुद्धता औ धर्मिज्ञानवादीके मतमें उक्त दोषका समाधान....	२६६
३५	तिक्तरसाध्यासमें कोईकी अन्यउक्ति औ खंडन.	२६८
३६	मुख्यसिद्धांतका कथन.	२६९
३७	धर्मिज्ञानवादमें आकाशमें नीलताध्यासका असंभवदोष औ ताका परिहार.	२७०
३८	सर्पादि भ्रमस्थलमें च्यारिमत औ चतुर्थ मतमें दोष.	२७१
३९	अनिर्वचनीयख्यातिमें उक्त च्यारे मतका अनुवाद औ ताकी समाप्तिका दोहा.....	२७५
४०	शास्त्रांतरमें उक्त पांचख्यातिके नाम	२७५
४१	सत्ख्यातिकी रीति.	२७६
४२	सत्ख्यातिवादका खंडन.	”
४३	शुक्तिमें सत्यरजतकी सामग्रीका अंगीकार औ खंडन.	२७७
४४	सत्ख्यातिवादीकारि उक्तदोषका परिहार औ ताका खंडन.	२७८
४५	रजतज्ञानकी निवृत्तिसें प्रातिभासिक औ व्यावहारिक रजतकी निवृत्ति औ ताका खंडन.	२७९
४६	सत्ख्यातिवादमें प्रबलदोष.	२८०
४७	त्रिविध असत्ख्यातिकी रीति शून्यवादीकी रीतिसें असत्ख्यातिवादका खंडन.	२८१
४८	कोईतांत्रिककी रीतिसें असत्ख्यातिवाद	२८२
४९	न्यायवाचस्पत्यकारकी रीतिसें असत्ख्यातिवाद.	२८३
५०	द्विविध असत्ख्यातिवादका खंडन	२८४
५१	आत्मख्यातिकी रीति औ खंडन आंतरपदार्थमानी आत्मख्यातिवादीका अभिप्राय.	२८४
५२	आंतरपदार्थमानी आत्मख्यातिवादीके मतका खंडन	२८५
५३	सौगतनके दो भेदनमें बाह्यपदार्थवादीकी आत्मख्यातिका अनुवाद.	२८६
५४	बाह्यपदार्थमानी आत्मख्यातिवादीके मतका खंडन.	२८७
५५	आत्मख्यातिवादतें विलक्षण अद्वैतवादका सिद्धांत.	२८८
५६	सिद्धांतोक्त गौरव दोषके परिहारपूर्वक द्विविधविज्ञानवादका असंभव.	२८९
५७	अन्यथाख्यातिकी रीति औ खंडन अन्यथाख्यातिवादीका तात्पर्य.	२९०
५८	विचारसागरोक्तद्विविधख्यातिवादमें प्रथम प्राचीन मतका प्रकार औ खंडन.	२९१
५९	पूर्वोक्त अन्यथाख्यातिवादका खंडन.	२९२

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
६०	प्रत्यक्षज्ञानके हेतु षड्विध लौकिक अरु त्रिविध अलौकिक ये दो संबन्ध.	२९३
६१	न्यायमतमैं अलौकिक संबन्धसैं देशांतरस्थ रजतत्वका शुक्तिमैं प्रत्यक्ष भान औ ता भानसैं सुगंधिचंदनके भानतैं विलक्षणता.	२९८
६२	अनिर्वचनीयख्यातिमैं न्यायउक्त दोष.	३००
६३	सामान्यलक्षणादि अलौकिकसंबन्धकूं प्रत्यक्ष ज्ञानहेतुताका असम्भवकरिकै भ्रमज्ञानकूं इंद्रिय अजन्यता	३०२
६४	अनिर्वचनीयवादमैं न्यायोक्त दोषका उद्धार.	३१०
६५	अख्यातिवादकी रीति औ खंडन अख्यातिवादीका तात्पर्य.	३१४
६६	अख्यातिवादीकरि अन्यकृत शंकाका उद्धार.	३१५
६७	अख्यातिवादका खंडन.	३१९
६८	भ्रमज्ञानवादीके मतमैं उक्त दोषका असम्भव.	३२३
६९	प्रमात्व अप्रमात्वके स्वरूप उत्पत्ति औ ज्ञानका प्रकार प्रमात्व अप्रमात्वका स्वरूप.	३२४
७०	न्यायवैशेषिक मतमैं ज्ञानकी उत्पादक सामग्रीतैं बाह्यसामग्रीतैं प्रमात्व अप्रमात्वकी उत्पत्ति (परतः प्रामाण्यवाद. औ परतः अप्रामाण्यवाद.)	३२६
७१	ज्ञान औ ज्ञानत्वकी सामग्रीतैं अन्यकारणतैं प्रमात्वके ज्ञानकी उत्पत्ति (परतः प्रामाण्यग्रहवाद.)	३२७
७२	मीमांसक औ सिद्धांतसंमत स्वतः प्रामाण्यवादमैं दोष.	३३२
७३	प्रभाकरके मतमैं सारै ज्ञानतैं त्रिपुटीका प्रकाश.	,,
७४	मुरारिमिश्रका मत.	,,
७५	भट्टका सिद्धान्त.	३३३
७६	न्यायवैशेषिक मतका निष्कर्ष.	३३४
७७	न्यायवैशेषिक मतका खंडन.	३३६
७८	मुरारिमिश्रके मतका खंडन.	३३८
७९	भट्टमतखंडन.	,,
८०	प्रभाकरमतका खंडन.	,,
८१	स्वतः प्रमाण्यवादका अंगीकार और सिद्धांतमैं उक्त संशयानुपपत्तिरूप दोषका उद्धार.	३३९
८२	न्यायमत (परतः प्रामाण्यवाद) मैं दोष.	३४०
८३	अख्यातिवादीके वचनका परिहार.	३४१
८४	भ्रांतिज्ञानकी त्रिविधता औ वृत्ति भेदका उद्धार.	३४२

अथ जीवेश्वरस्वरूपवृत्तिप्रयोजनसहित कल्पितानिवृत्ति स्वरूपनिरूपणं नामाष्टमः प्रकाशः ८.

१	अज्ञानविषे विचार वृत्तिके प्रयोजन कहनेकी प्रतिज्ञा.	३४३

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
२	अज्ञानका आश्रय औ विषय.	३४३
३	अज्ञानका निरूपण.	३४४
४	अज्ञानकी अनादि भावरूपतामैं शंका	,,
५	उक्त शंकाका समाधान.	३४५
६	जीव औ ईश्वरविषै विचार माया अविद्यापूर्वक जीव ईश्वरके रूपमैं च्यारिपक्ष.	३४६
७	उक्त चारिपक्षनमैं मुक्तजीवनका शुद्धब्रह्मसैं अभेद.	३४७
	उक्त च्यारिपक्षनमैं षट् अनादि पदार्थ कहिके त्रिविध चेतनका अंगीकार.	३४८
९	चित्रदीपमैं विद्यारण्यस्वामीके कहे उक्त चेतनके च्यारि भेद.	,,
१०	बिंबप्रतिबिंबवादसैं आभासवादका भेद.	३४९
११	आभासवादकी रीतिसैं जीवब्रह्मके अभेदके वाक्यनमैं बाधसमानाधिकरण.	,,
१२	कूटस्थ औ ब्रह्मके अभेद स्थलमैं अभेद (मुख्य) समानाधिकरण.	,,
१३	उक्तबाधसमानाधिकरणमैं विवरणकारके वचनतैं अविरोध.	३५०
१४	विवरणोक्त जीवका ब्रह्मसैं मुख्य समानाधिकरण औ विद्यारण्यके वाक्यकी प्रौढिवादता.	,,
१५	विद्यारण्योक्त चेतनके च्यारि भेदका अनुवाद.	३५१
१६	विद्यारण्यस्वामीउक्त बुद्धिवासनामैं प्रतिबिंबकी ईश्वरताका खंडन.	३५१
१७	विद्यारण्य स्वामीउक्त आनंदमय कोशकी ईश्वरताका खंडन.	३५२
१८	मांडूक्योपनिषदुक्त आनंदमयकी सर्वज्ञता आदिकका अभिप्राय.	३५३
१९	आनंदमयकी ईश्वरतामैं विद्यारण्यस्वामीके तात्पर्यका अभाव.	३५५
२०	चेतनके तीनि भेदका विद्यारण्य स्वामी सहित सर्वकूं स्वीकार....	,,
२१	जीवका मोक्षदशामैं उक्त पक्षनविषै शुद्धब्रह्मसैं औ विवरणपक्षविषै ईश्वरसैं अभेद.	३५६
२२	वेदांतके सिद्धांतमैं प्रक्रियाके भेद विवरणकारके मतमैं अज्ञानविषै प्रतिबिंब जीव औ बिंब ईश्वरका निरूपण	,,
२३	अवच्छेदकवादीकारि आभासवादका खंडन औ स्वमतका निरूपण.	३५७
२४	अवच्छेदवादका कथन.	३५९
२५	अंतःकरणसैं अवच्छिन्नचेतन जीव और अनवच्छिन्न चेतन ईश्वर है इस पक्षका खंडन.	,,
२६	तृप्तिदीपमैं विद्यारण्यस्वामीउक्तअंतःकरणके संबंध औ ताके अभावके उपाधिपनेका अभिप्राय.	३६०

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
२७	अवच्छेदवादके भेदपूर्वकताकी समाप्ति.	३६०
२८	सिद्धांतमुक्तावलि आदिकविषै उक्त एक जीव (दृष्टिसृष्टि) वादका निरूपण.	३६१
२९	वेदांतसिद्धांतकी नाना प्रक्रियाका तात्पर्य सकल अद्वैत ग्रंथके तात्पर्यका विषय.	३६३
३०	जीव ईश्वरविषै सर्व ग्रंथकारनकी संमतिका एकत्र निर्णय.	,,
३१	विवरणकारकी रीतिसैं प्रतिबिंबके स्वरूपका निरूपण.	३६४
३२	विद्यारण्यस्वामीके औ विवरणकारके मतकी विलक्षणता.	३६५
३३	दोनोंके पक्षनकी उपादेयता.	३६६
३४	बिंबप्रतिबिंबके अभेदपक्षकीरीतिकी अभेदके बोधनमैं सुगमता ...	,,
३५	प्रतिबिंबविषैं विचार आभासवाद और प्रतिबिंबवादसैं किंचिद्भेद.	३६७
३६	प्रतिबिंबकी छायारूपताका निषेध.	,,
३७	प्रतिबिंबकी बिंबसैं भिन्नव्यावहारिक द्रव्यरूपताका निषेध.	,,
३८	आभासवाद औ प्रतिबिंबवादकी युक्तिसहितता कहिकै दोनूं पक्षनमैं अज्ञानकी उपादानता.	३६९
३९	मूलाज्ञानकूं वा तूलाज्ञानकूं प्रतिबिंब वा ताके धर्मनकी उपादानताके असंभवकी शंका.	,,
४०	उक्तशंकाका कोईक ग्रंथकारकी रीतिसैं समाधान.	३७०
४१	उक्तशंकाका अन्यग्रंथकारोंकी रीतिसैं समाधान.	३७०
४२	मूलाज्ञान और तूलाज्ञानके भेदविषै किंचित् विचार.	,,
४३	आभासवाद औ प्रतिबिंबवादमैं धर्मी वा धर्मके अध्यासकी उत्पत्तिका उपादान तूलाज्ञानकूं मानिके अधिष्ठानका भेद.	३७१
४४	दोनूं पक्षनमैं मूलाज्ञानकी उपादानता मानैं तौ अधिष्ठानका भेद और मूलाज्ञानकूं उक्त अध्यासके उपादानताकी योग्यता.	,,
४५	तूलाज्ञानकूं प्रतिबिंबाध्यासकी उपादानताके वादीका मत	३७२
४६	उक्तमतके निषेधपूर्वक मूलाज्ञानकूंही प्रतिबिंबाध्यासकी उपादानता	३७३
४७	मूलाज्ञानकी उपादानताके पक्षमैं शंका.	३७४
४८	उक्तशंकाका समाधान.	,,
४९	एकदेशीकी रीतिसैं बाधकालक्षण.	३७५
५०	बहुतग्रंथकारनकी रीतिसैं बाधका लक्षण औ ब्रह्मज्ञानविना प्रतिबिंबाध्यासके बाधकी सिद्धि.	३७५
५१	मुखदर्पणादि अधिष्ठानके ज्ञानकूं प्रतिबिंबाध्यासकी निवृत्तिकी हेतुता.	३७६
५२	मुखदर्पणादिकके ज्ञानकूं मूलाज्ञानकीनिवृत्तिविना प्रतिबिंबाध्यासकी नाशकता.	३७७

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
९३	उक्तपक्षमें पद्मपादाचार्यकृतपंचपादिकाकी रीतिसैं तूलाज्ञानकूं अध्यासकी हेतुताके वादीकी शंका.....	३७८
९४	उक्तशंकाकी अयुक्तता.	३८०
९५	तूलाज्ञानकूं उक्त अध्यासकी हेतुता मानैं तौ पंचपादिकाके वचनसैं विरोध औ मूलाज्ञानकूं हेतुता मानैं तौ अविरोध.	३८१
९६	प्रतिबिंबाध्यासकी व्यावहारिकता औ प्रातिभासिकताके विचारपूर्वक स्वप्नाध्यासके उपादानके विचारकी प्रतिज्ञा.	३८३
९७	स्वप्नविषै विचार तूलाज्ञानकूं स्वप्नकी उपादानताकी रीति.	,,
९८	उक्तपक्षमैं शंका.	३८५
९९	उक्तशंकाका समाधान.	,,
१००	व्यावहारिक जीव औ जगत्कूं स्वप्नके प्रातिभासिक जीव औ जगतका अधिष्ठानपना.	,,
१०१	उक्तपक्षकी अयुक्तापूर्वकचेतनकूं स्वप्नका अधिष्ठानपना.	३८६
१०२	अहंकारावच्छिन्न चेतनकूं स्वप्नका अधिष्ठानमानिकै तूलाज्ञानकूं ताकी उपादानता औ जाग्रत्के बोधसैं ताकी निवृत्ति.	३८६
१०३	अहंकाराऽनवच्छिन्नचेतनकूं स्वप्नका अधिष्ठान मानिके मूलाज्ञानकूं ताकी उपादानता और उपादानमैं विलयरूपताकी निवृत्ति	,,
१०४	अहंकाराऽनवच्छिन्नचेतनकूंही अधिष्ठानमानिकै विरोधीज्ञानतैं अज्ञानकी एक विक्षेपहेतुशक्तिके नाशका अंगीकार.....	३८७
१०५	उक्तचेतनकूं स्वप्नकी अधिष्ठानवादमैं शरीरके अंतर्देशस्थचेतनकूंही अधिष्ठानताका संभव.	,,
१०६	शरीरके अंतर्देशस्थ अहंकाराऽनवच्छिन्नचेतन स्वप्नकी अधिष्ठानताकी योग्यता.	३८८
१०७	बाह्यांतरसाधारणदेशस्थचेतनमैं स्वप्नकी अधिष्ठानताके कथनमैं गौडपाद और भाष्यकार आदिकनके वचनसैं विरोध.....	,,
१०८	अहंकाराऽनवच्छिन्नचेतनभी अविद्यामैं प्रतिबिंब और बिंब दोनू हैं तिनमैं प्रतिबिंबरूप जीवचेतनकूं अधिष्ठानताका संभव.	३८९
१०९	उक्तपक्षविषै संक्षेपशारीरकमैं उक्त अध्यासकी अपरोक्षतावास्ते अधिष्ठानकी त्रिविध अपरोक्षता.	,,
७०	उक्तपक्षमैं शंकासमाधानपूर्वक जीवचेतनरूप अधिष्ठानके स्वरूप प्रकाशतैं स्वप्नका प्रकाश	३९०
७१	अद्वैतदीपिकामें नृसिंहाश्रमाचार्योक्त आकाशगोचर चाक्षुषवृत्तिके निरूपणपूर्वक संक्षेपशारीरकोक्त आकाशगोचर मानसवृत्तिका अभिप्राय.	,,

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
७२	उभयमतके अंगीकारपूर्वक अद्वैतदीपिकोक्तरीतिकी समीचीनता	३९१
७३	रज्जुसर्पादिकनकी सर्वमतमैं तूलाज्ञानकूंही उपादानता.	३९२
७४	स्वप्नके अधिष्ठान आत्माकी स्वयंप्रकाशतामें प्रमाणभूतबृहदारण्यककी श्रुतिका अभिप्राय....	,,
७५	स्वप्नमें इंद्रिय औ अंतःकरणकूं ज्ञानकी असाधनताकहिके स्वतः अपरोक्षआत्मासैं स्वप्नकी अपरोक्षता	३९३
७६	दृष्टिसृष्टि और सृष्टिदृष्टि वादका भेद दृष्टिसृष्टिवादमें सकल अनात्माकी ज्ञातसत्ता (साक्षीभास्यता) कहिकै दृष्टिसृष्टिपदके दो अर्थ.	३९३
७७	सृष्टिदृष्टिवाद (व्यवहारिकपक्ष) का कथन.	३९४
७८	मिथ्याप्रपंचके मिथ्यात्वमें शंका समाधान उक्त दोनूं पक्षविषै मिथ्यापदार्थनके मिथ्यात्व धर्ममें द्वैतवादिनका आक्षेप.	,,
७९	उक्त आक्षेपका अद्वैतदीपिकोक्त समाधान.	३९५
८०	मिथ्याप्रपंचके मिथ्यात्व धर्ममें प्रकारांतरसैं द्वैतवादिनका आक्षेप....	३९६
८१	उक्त आक्षेपके उक्तही समाधानकी घटितता.	३९७
८२	अद्वैतदीपिकोक्त समाधानका सत्ताके भेद मानैं तौ संभव औ एक सत्ता मानैं तौ असंभव.	३९७
८३	उक्त आक्षेपका निश्चलदासोक्त समाधान.	३९७
८४	उक्त आक्षेपका अन्यग्रंथकारोक्त समाधान....	३९८
८५	मतभेदसैं पांचप्रकारका प्रपंचके सत्यत्वका प्रतिक्षेप (तिरस्कार)	३९९
,,	तत्त्वशुद्धिकारकी रीतिसैं प्रपंचके सत्यत्वका प्रतिक्षेप.	,,
८६	अन्यग्रंथकारनकी रीतिसैं प्रपंचके सत्यत्वका प्रतिक्षेप.	४००
८७	न्यायसुधाकारकी रीतिसैं प्रपंचके सत्यत्वका प्रतिक्षेप	,,
८८	अन्य आचार्यकी रीतिसैं प्रपंचके सत्यत्वका प्रतिक्षेप.	४०१
८९	संक्षेपशारीरककी रीतिसैं प्रपंचके सत्यत्वका प्रतिक्षेप	,,
९०	कर्मकूं ज्ञानकी साधनताविषै विचार मिथ्याप्रपंचकी निवृत्तिमें कर्मके अनुपयोगके अनुवादपूर्वक सिद्धांतके द्विविधसमुच्चयका निर्धार....	४०२
९१	भाष्यकारोक्तिकी साधनता	४०३
९२	वाचस्पत्युक्त जिज्ञासाकी साधनता	,,
९३	विवरणकारोक्तकर्मकूं ज्ञानकी साधनता	,,
९४	वाचस्पति औ विवरणकारके मतकी विलक्षणतामें शंका	४०४

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
९५	उक्तशंकाका समाधान	४०५
९६	कोई आचार्यकी रीतिसैं वर्णमात्रके धर्मनका विद्यामैं उपयोग.	४०६
९७	कल्पतरुकारकी रीतिसैं सकल नित्यकर्मनका विद्यामैं उपयोग	४०६
९८	संक्षेपशारीरिककर्ताकी रीतिसैं काम्य औ नित्यसकल शुभकर्मका विद्यामैं उपयोग	”
९९	संन्यासकी ज्ञानसाधनताविषै विचार, पापनिवृत्तिद्वारा ज्ञानके हेतु होनेतैं क्रमकारिकर्म औ संन्यास दोनोंकी कर्तव्यता.	४०७
१००	किसी आचार्यके मतमैं संन्यासकूं प्रतिबंधक पापकी निवृत्तिद्वारा पुण्यकी उत्पत्ति श्रवणकी साधनता.	”
१०१	विवरणकारके मतमैं संन्यासकूं ज्ञानप्रतिबंधकविक्षेपकी निवृत्ति औ पुण्यकी उत्पत्तिरूप दृष्टफलकी हेतुता.	”
१०२	क्षत्रिय औ वैश्यके संन्यास औ श्रवणमैं अधिकारका विचार. क्षत्रिय औ वैश्यके संन्यास औ श्रवणमैं अधिकारके विचारकी प्रतिज्ञा.	४०८
१०३	कोई ग्रंथकारकी रीतिसैं संन्यासमैं तथा ब्रह्मश्रवणमैं ब्राह्मणकाही अधिकार, औ क्षत्रिय वैश्यका अनधिकार	”
१०४	अन्यग्रन्थकारकी रीतिसैं संन्यासमैं केवल ब्राह्मणका अधिकार, क्षत्रिय और वैश्यका संन्यासकूं छोडिकै केवल ब्रह्मश्रवणमैं अधिकार.	४०९
१०५	तिनसैं अन्यग्रन्थकारकी रीतिसैं क्षत्रिय वैश्यका ब्रह्मश्रवणादिककी न्याईं विद्वत्संन्यासमैं भी अधिकार.	४०९
१०६	वार्तिककारके मतमैं विविदिषा संन्यासमैं क्षत्रियवैश्यका अधिकार	”
१०७	औ कोई ग्रन्थकारकी रीतिसैं ब्राह्मणके ज्ञानमैं संन्यासकी अपेक्षा औ क्षत्रिय वैश्यकूं संन्यासमैं अनधिकार औ विद्याके उपयोगी कर्ममें अरु वेदान्तश्रवणमैं अधिकार.	४१०
१०८	किसी ग्रन्थकारके मतमैं शूद्रकूं श्रवणमैं अधिकार.	४११
१०९	अन्यग्रन्थकारनकी रीतिसैं शूद्रकाभी वेदभिन्नपुराणइतिहासादिरूप अध्यात्मग्रन्थनके श्रवणादिकमैं अधिकार.	”
११०	मनुष्यमात्रकूं भक्ति औ ज्ञानका अधिकार अंत्यजादिमनुष्यमात्रकूं तत्त्वज्ञानका अधिकार.	४१२

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
१११	तत्त्वज्ञानमैं दैवीसम्पदाकूं अपेक्षापूर्वक मनुष्यमात्रकूं भगवद्भक्ति औ तत्त्वज्ञानके अधिकारका निर्धार.	४१३
११२	तत्त्वज्ञानतैं स्वहेतु अज्ञानकी निवृत्तिविषै शंका समाधान, अज्ञानके कार्य अन्तःकरणकी निवृत्तिरूप तत्त्वज्ञानतैं ताके कारण अज्ञानकी निवृत्तिमैं शंका	,,
११३	उक्त शंकाका समाधान	४१४
११४	अविद्यालेशसंबंधी विचार, तत्त्वज्ञानसैं अविद्यारूप उपादानके नाश हुये जीवन्मुक्ति विद्वान्‌के देहके स्थितिकी शंका.	४१५
११५	उक्तशंकाका कोईक आचार्यकी रीतिसैं समाधान.	४१५
११६	उक्तसमाधानका असंभव.	,,
११७	अविद्यालेशके तीन प्रकार.	,,
११८	प्रकृत अर्थमैं सर्वज्ञात्ममुनिका मत.	४१६
११९	उक्तमतका ज्ञानीके अनुभवमैं विरोध.	,,
१२०	अविद्याकी निवृत्तिकालमैं तत्त्वज्ञानकी निवृत्तिकी रीति.	,,
१२१	प्रकृत अर्थमैं पंचपादिकाकारका मत	४१७
१२२	तत्त्वज्ञानके कारण औ सहकारी साधनविषै विचार, उत्तम औ मध्यम अधिकारीके भेदतैं तत्त्वज्ञानके दो साधनोंका कथन	,,
१२३	उक्त दोनोंपक्षमैं प्रसंख्यानकूं तत्त्वज्ञानकी कारणतारूप प्रमाणता.	,,
१२४	भामतीकारवाचस्पतिके मतमैं प्रसंख्यानकूं मनकी सहकारिता औ मनकूं ब्रह्मज्ञानकी करणता	४१८
१२५	अद्वैतग्रन्थनका मुख्यमत (एकाग्रता सहित मनकूं सहकारिता औ वेदांत वाक्यरूप शब्दकूं ब्रह्मज्ञानकी करणता)	४१८
१२६	शब्दसैं अपरोक्षज्ञानका उत्पत्तिमैं शंकासमाधान	४१९
१२७	अन्यग्रन्थकी रीतिसैं शब्दकूं अपरोक्ष ज्ञानकी जनकता.	४२०
१२८	विषय औ ज्ञानकी अपरोक्षताविषै विचार, अन्यग्रंथकारकी रीतिसैं ज्ञान औ विषय दोनूंमैं अपरोक्षत्वव्यवहारका कथन	,,
१२९	उक्त अर्थमैं शंकासमाधान	४२१
१३०	विषयमैं परोक्षत्व अपरोक्षत्वके संपादक प्रमातृचेतनके भेद औ	

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
	अभेद सहित विषयगत परोक्षत्व अपरोक्षत्वके आधीनहीं ज्ञानके परोक्षत्वापरोक्षत्वका निरूपण	४२२
१३१	उक्तमतमैं अवांतरवाक्यजन्य ब्रह्मज्ञानके अपरोक्षताकी प्राप्ति-रूपदोष.	,,
१३२	उक्तदोषसैंअपरोक्षताकाऽन्यल०	४२३
१३३	अपरोक्षज्ञानमैं सर्वज्ञात्ममुनिके मतका अनुवाद.	४२४
१३४	नेडेहीं दूषितविषयगत अपरोक्षताके आधीन ज्ञानगतअपरोक्षता है या मतका अनुवाद	,,
१३५	अद्वैतविद्याचार्यकी रीतिसैं विषयगत औ ज्ञानगत अपरोक्षत्वका प्रकारांतरसैं कथन औ दूषित उक्त मतमैं दूषणान्तरका कथन.	,,
१३६	अपरोक्षके उक्तलक्षणके असम्भवका अनुवाद	४२५
१३७	उक्तदोषसैं रहित अपरोक्षका ल०	,,
१३८	वृत्तिरूपप्रत्यक्षज्ञानमैं उक्त अपरोक्षके लक्षणकी अव्याप्ति	४२६
१३९	उक्त अव्याप्तिका अद्वैतविद्याचार्यकी रीतिसैं उद्धार	४२७
१४०	उक्तपक्षमैं शंका	,,
१४१	उक्तशंकाका समाधान	,,
१४२	उक्तपक्षमैं अन्यशंका	४२८
१४३	उक्तशंकाका समाधान	,,
१४४	शब्दसैं अपरोक्षज्ञानकी उत्पत्तिमैं कथनकिये तीनमतविषै प्रथममतकी समीचीनता.	४२९
१४५	वृत्तिके प्रयोजनका कथन ग्रंथके आरंभमैं उक्ततीन प्रश्नोंका और तिनमैं कथनकिये दोनूंके उत्तरका अनुवाद.	४२९
१४६	वृत्तिके प्रयोजनसंबंधीतृतीयप्रश्नके उत्तरका आरंभ.	४३०
१४७	वृत्तिप्रयोजनके कथनावसरमैं जाग्रत्का लक्षण.	,,
१४८	कोईग्रंथकारकी रीतिसैं आवरणका अभिभववृत्तिका प्रयोजन.	,,
१४९	समष्टि अज्ञानकूं जीवकी उपाधिकताके पक्षमैं ब्रह्म वा ईश्वर वा जीवचेतनके संबंधसैं आवरणके अभिभवका असंभव.	४३१
१५०	यापक्षमैं अपरोक्षवृत्तिसैं वा अपरोक्ष वृत्तिविशिष्टचेतनसैं आवरणके अभिभवका संभव.	,,
१५१	उक्तपक्षकी रीतिसैं आवरण नाशरूपवृत्तिके प्रयोजनका कथन.	४३२
१५२	द्वितीयपक्षकी रीतिसैं जीवचेतनसैं विषयके संबंधरूपवृत्तिके प्रयोजनका कथन.	,,
१५३	अंतःकरणविशिष्टचेतनजीवहै या पक्षमैं विषयसंबंधार्थ वृत्तिकी अपेक्षा.	४३३

प्रसंगांक.	विषय.	पृष्ठांक.
१९४	उक्त दोनूं पक्षनकी विलक्षणता	४३३
१९५	मतभेदसैं संबंधमैं विलक्षणताके कथनकी असंगतता.	,,
१९६	च्यारिचेतनके कथनपूर्वकउक्त अर्थकी सिद्धि.	४३४
१९७	जाग्रतमैं होनेवाली वृत्तिके अनुवाद पूर्वक स्वप्नावस्थाका लक्षण	४३५
१९८	सुषुप्ति अवस्थाका लक्षण.	,,
१९९	सुषुप्तिसंबन्धी अर्थका कथन	४३६
१६०	उक्त अवस्थाभेदकूं वृत्तिकी अधीनता.	,,
१६१	वृत्तिके प्रयोजनका कथन.	,,
१६२	कल्पितकी निवृत्तिविषे विचार कल्पितकी निवृत्तिकूं अधिष्ठानरूपतापूर्वकमोक्षमें द्वैतापत्तिदोषके कथनकी अयुक्तता.	,,
१६३	न्यायमकरंदकारोक्त अधिष्ठानरूप कल्पितकी निवृत्तिपक्षमें दूषण.	४३७
१६४	न्यायमकरंदकारकी रीतिसैं अधिष्ठानसैं भिन्नकल्पितकी निवृत्तिका निरूपण.	४३८
१६५	न्यायमकरंदकारकी रीतिसैं कल्पितनिवृत्तिके स्वरूपनिर्णयवास्ते अनेकविकल्पनका लेख.	४३९
१६६	न्यायमकरंदकारकी रीतिसैं उक्त च्यारिप्रकारसैं विलक्षण औ ब्रह्मसैं भिन्नपंचमप्रकाररूपकल्पितकी निवृत्तिका स्वरूप	४४०
१६७	न्यायमकरंदकारके मतकी असमीचीनता.	४४१
१६८	न्यायमकरंदकारोक्त ज्ञात अधिष्ठानरूपकल्पितकी निवृत्तिपक्षमें दोषका उद्धार औ प्रसंगमें विशेषणउपाधि और उपलक्षणका लक्षण.	४४२
१६९	अधिष्ठानरूपनिवृत्तिके पक्षमें पंचमप्रकारवादीकी शंका.	४४४
१७०	उक्तशंकाका समाधान.	,,
१७१	न्यायमकरंदतैं अन्यरीतिसैं अधिष्ठानतैं भिन्न कल्पितकी निवृत्तिका स्वरूप	,,
१७२	उक्तमतमैं पुरुषार्थका स्वरूप (दुःखभाव वा केवल सुख)	४४५

इति वृत्तिप्रभाकरविषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥